# वनरोपण कार्य के लिए निर्धारित समय सारिणी

| माह | कार्य | अभियुक्ति |
|---|---|---|
| अक्टूबर : | 1. नये क्षेत्र में अग्रिम कार्य शुरु करना जैसे झाड़ी कटाई, फेन्सिंग इत्यादि। | |
| | 2. शरीफा बीज इकट्ठा करना | |
| | 3. स्थानीय लोगों से सम्पर्क स्थापित कर अगले वर्ष के लिए सामाजिक वन के लिए जमीन प्राप्त करना। अवकृष्ट वनों के पुनर्वास हेतु ग्राम वन प्रबंधन एवं सुरक्षा समिति गठन करना। | |
| | 4. नये क्षेत्र में वर्षा के बाद दूसरी निकौनी करना | |

**नवम्बर :** 1. नये वनरोपण क्षेत्र में अग्रिम कार्य :—
झाड़ी कटाई, सफाई, फेन्सिंग इत्यादि का कार्य करना।
2. कंटीलेतार घेरा के लिए खूंटा खरीदना एवं
उसका ट्रिटमेन्ट करना।
3. हरिजन की अपनी जमीन पर वृक्षारोपण
के लिए उनसे सम्पर्क स्थापित करना।
4. पौलिथिन थैनियाँ तथा अन्य आवश्यक
चीजों की खरीद करना।

**दिसम्बर :** 1. कंटीलेतार खरीदना। साथ ही अन्य तरीके से
घेरान सम्पन्न करने की व्यवस्था करना।
2. जाड़े की अच्छी वर्षा के तुरन्त बाद
तीसरी निकौनी सम्पन्न करना।
3. प्राकृतिक रूप से निकले पौधों की मदद
में सफाई करना।
4. अग्रिम कार्य : झाड़ी सफाई, गड्ढा खोदना।
5. नर्सरी में आम के पौधें पर पाला से रक्षा की
व्यवस्था करना।
6. नर्सरी के खाली बेड कोड़ना।
7. आम के एक वर्ष के पौधे पर कलम लगाना।

तीसरी निकौनी पलामू, नवादा, गया रोहतास जैसे सूखा क्षेत्रों में आवश्यक है

**जनवरी :** 1. अगले वर्ष के लिए अग्रिम कार्य जैसे झाड़ी
सफाई, गड्ढा खोदना, घेरा देना।
2. अस्थाई नर्सरी के सथान का चुनाव, पौलिथिन
थैलियों में भरने के लिए मिट्टी, बालू खाद
एलड्रीन इकट्ठा करना।
3. वनरोपण क्षेत्रों में आग से सुरक्षा की कार्रवाई
पूरा करना —लाईन सफाई इत्यादि।
4. बीज इकट्ठा करना, शीशम, सागवान, खैर,
युकलिप्टस, सिरिश, बैर, आँवला, अमरूद आदि।

**फरवरी :** 1. झाड़ी सफाई सम्पन्न करना, ट्रेन्च फेन्सिंग,
गढ़ा खेदना कार्य पूरा करना, कँटीलेतार घेरा,
पत्थल घेरा का कार्य करना।
2. स्थाई तथा अस्थाई नर्सरी में आवश्यकतानुसार
पौलिथिन थैलियाँ भरना एवं युकलिप्टस बीज बुनने
के लिए बेड तैयार करना और माह के अन्त में बुनना।
3. आग सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध करना तथ 15 फरवरी

तक फायर लाईन जलाकर कार्य समाप्त करना,
बीज इकट्ठा करना, शीशम, सागवान, खैर, चकुण्डी,
युकलिप्टस, सिरिश, इमली, बैर आँवला, अमरूद आदि।

4. आम पर कलम लगाना

| | | |
|---|---|---|
| **मार्च ः** | 1. अग्रिम कार्य सम्पन्न करना।<br>2. भूसंरक्षण का कार्य करना ।<br>3. थैलियों में युकलिप्टस लगाना तथा खैर छोड़कर अन्य प्रकार के बीज बुनना। फलदार पौधे के उपलब्ध बीज थैलियों में बुनना ।<br>4. आग सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध<br>5. आम पर कलम लगाना। | बीज बुनने का समय अवश्य लिखें। यदि निर्धारित समय के भीतर अंकुरन नहीं आता है तो पुनः बीज बुनें। एक ही पौधा का बीज अलग–अलग स्थानों से प्राप्त होता है तो उन्हें अलग–2 बुनें जिससे असफलता का कारण जाना जा सके। |
| **अप्रैल ः** | 1. आने वाले अगले वर्ष के लिए प्रस्तावित ऐरिया का चुनाव एवं नक्शा तैयार करना।<br>2. युकलिप्टस पौधों को थैलियों में लगाना और 15 अप्रैल तक पूरा करें।<br>3. खैर की बुनाई करें।<br>4. असफल थैलियों को अलग करें। स्थाई नर्सरी में पटवन करें, एवं शीशम बुनें। सागवान तथा बीजा का प्रीट्रिटमेंन्ट करें।<br>5. बेल, सीमल, बेर, शरीफा, अमरूद आदि अस्थाई नर्सरी में बुनें। | स्थाई तथा अस्थाई नर्सरी में नये प्रिक आउट पौधों पर छाया आवश्यक है। परन्तु छाया केवल आवश्यकतानुसार ही देनी चाहिए। |
| **मई ः** | 1. स्थाई नर्सरी के खाली बेड की मिट्टी कोड़ना।<br>2. सागवान बीज की बुनाई करना। | बीज लगाने की तिथि अवश्य लिखें। यदि निर्धारित समय के भीतर अंकुरन नहीं |

3. अन्तिम सप्ताह में गम्हार, महुआ, पपीता, बीजा, सलई से उपलब्ध नये बीज बुनें।
4. सलई, कटिंग लगाना।
5. पिछले वर्ष के वनरोपण क्षेत्र में मरे पौधों के स्थान पर गढ़ा खोदना तथा फेन्सिंग मरम्मत करना।
6. अंकुरन के लिए शीशम बगैरह के स्टम्प 15 मई तक थैलियों में दिये जाय।

होता है तो पुनः बीज बुनें ।

**जून ः**

1. ट्रेन्च फेन्सिंग तथा कन्टूर ट्रेन्च पर प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में दो बार बबूल, खैर, जलेबी, घोरकरंज, चकुण्डी, गम्हार, बकाईन इत्यादि का बीज बुनना।
2. बाँस रायजोम लगाना, सलई कटिंग लगाना।
3. सेमल, शीशम, सागवान बीज इत्यादि का रूट—सूट लगाना।
4. भूरक्षण के रोकथाम के लिए चेकडैम के उपर तथा नीचे दोनों ओर सिन्दवार का कटिंग लगाना।
5. झाड़ी घेरा के लिए बबूल, खैर बुनना।
6. अच्छी वर्षा शुरु होने पर थैलों में उगाये पौधा लगाना।
7. आम, महुआ, जामुन, कटहल इत्यादि का बीज लगाना।
8. कलम लगे पौधों का स्थान परिवर्तन करना एवं जड़ बाँधना।
9. फलदार पौधों जैसे —निम्बू, अमरूद इत्यादि में गुटी बाँधना।
10. प्रिक आउट करना।
11. हरित खाद के लिए खाली बेड में ढैचा या सनई बुनना।

फलदार पौधों को दूर ले जाने के लिए नर्सरी बेड से उखाड़ कर जड़ें बांध कर छाया में रखने की व्यवस्था करें, स्थान बदलने पर भी छाया देना आवश्यक होगा।

**जुलाई ः**

1. वनरोपण क्षेत्र में पौधा लगाना सम्पन्न करना। नये तथा पुराने वनरोपण क्षेत्र दोनों में एक साथ कार्य होना चाहिए। वृक्षारोपण के साथ फासफेट खाद देना।
2. नर्सरी में प्रिक आउट सम्पन्न करना।

3. नर्सरी में फलदासर पौधें जैसे आम, कटहल, महुआ इत्यादि के बीज लगाना।
4. नर्सरी में कलम लगाना।
5. फलदार पौधों में गुंटी बाँधाना।
6. पिछले वर्ष के वनरोपण क्षेत्र में 15 जुलाई से निकौनी करना एवं फलदार पौधें में खाद देना।
7. सभी प्रकार के घेरान की मरम्मत करना खासकर ट्रेन्च फेन्सिंग जो पानी के बहाव से टूटता रहता है।

**अगस्त ః**

1. बनरोपण क्षेत्र में प्रथम निकौनी सम्पन्न करना, नेत्रजन खाद देना एवं मरे पौधों के स्थान पर नया पौधा देना।
2. नर्सरी में प्रिक आउट सम्पन्न करना।
3. फलदार पौधों में लगे गुंटी को हटाना एवं नर्सरी में या गमला में लगाना जब तक पुराने पत्ते झड़ जाय और नये पत्ते नहीं निकले छाया देना।
4. अगले वर्ष के लिए कँटीलेतार एवं पौलिथिन बैग खरीदने की व्यवस्था करना ।

प्राकृतिक रूप स निकले छोटे लाभ–दायक पौधों की निकौनी करें एवं उसके निकट की झाड़ वगैरह साफ करें। निकौनी में एक मीटर चारों ओर घास, झाड़ी सफाई एवं मिट्टी कोड़ने का कार्य करें ।

5. हरित खाद के लिए प्रथम सप्ताह में फूल निकलते ही ढैचा, सबई का मिट्टी से दबाना। कुछ पौधे बीज के लिए छोड़ देना चाहिए।

**सितम्बर ః**

1. अग्रिम कार्य के लिऐ नये एरिया को जिसकी नक्शा इत्यादि अप्रैल माह में तैयार हो चुका है पुनः देखें और अग्रिम कार्य की तैयारी करें।
2. दूसरी निकौनी पुराने क्षेत्रों में करना।
3. फेन्सिंग मरम्मत करना खास कर ट्रेन्च फेन्सिग एवं झाड़ी फेन्सिंग।
4. भूक्षरण कार्य मरम्मत।
5. शरीफा बीज संग्रहण